A Pratibha Spandan Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 02, July-December, 2025

हिमाचल की धार्मिक संस्कृति में लोकवाद्यों का महत्व

Dr. Sarita Negi
Assistant Professor, Music Department, Gurukul Kangri Deemed to be University, Haridwar

OPEN ACCESS

सारांश

हिमाचल प्रदेश की धार्मिक संस्कृति में लोकवाद्यों का विशेष महत्व है। यहाँ के लोग संगीत और वाद्ययंत्रों को केवल मनोरंजन का साधन नहीं मानते, बल्कि इन्हें देवताओं तक पहुँचने का माध्यम मानते हैं। मंदिरों के अनुष्ठानों, मेलों और देव-यात्राओं में ढोल, नगाड़ा, रणसिंघा, कर्णाल, शहनाई और दमाऊ जैसे लोकवाद्य अनिवार्य रूप से बजाए जाते हैं। इनकी ध्वनि से धार्मिक वातावरण पवित्र और उत्साहपूर्ण बनता है। ढोल-नगाड़ों की गूँज देवताओं की उपस्थिति का संकेत मानी जाती है, जबकि शहनाई और कर्णाल श्रद्धा और भक्ति की गहराई को स्वर देते हैं। इस प्रकार, लोकवाद्य हिमाचल की धार्मिक परंपराओं में न केवल संगीत का आधार हैं, बल्कि आस्था, संस्कृति और सामूहिक उत्सव के प्रतीक भी हैं। ये वाद्य लोगों की भक्ति भावना को देवत्व से जोड़कर धार्मिक जीवन को और भी जीवंत बना देते हैं। हिमाचल प्रदेश की धार्मिक परंपराओं में लोकवाद्यों की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। ये वाद्य केवल ध्वनि उत्पन्न करने वाले यंत्र नहीं, बल्कि आस्था और भक्ति के जीवंत प्रतीक हैं। इनके बिना किसी भी देवअनुष्ठान, मेला या पर्व की कल्पना अधूरी मानी जाती है। ढोल, नगाड़ा, शहनाई और कर्णाल की गूँज देवताओं की उपस्थिति का आभास कराती है और भक्तों के मन को श्रद्धा से भर देती है। इस प्रकार, लोकवाद्य हिमाचल की धार्मिक संस्कृति के अभिन्न अंग हैं, जो परंपरा, भक्ति और सामूहिकता की भावना को जीवित रखते हैं।

***मुख्य शब्द**: आस्था, अनुष्ठान, सामूहिकता, लोकवाद्य, धार्मिक परम्परा*

भूमिका

किसी भी समाज की संस्कृति उस समाज की लोककला के माध्यम से अलंकृत होती है। लोककला में भी संगीत कला ने समाज में मानवीय संवेदनाओं को जिस सशक्त ढंग से उभारने का कार्य किया है, शायद ही किसी और पहलुओं से न हुआ हो। संगीत का विशेष कर लोकसंगीत का मुख्य आधार वे सामाजिक विश्वास, रोति-रिवाज, उत्सव, त्यौहार एवं अन्य विशिष्ट मूल्य हैं, जो सामाजिक रूप व्यवहारिकता में युक्त होते हैं। उनमें सहज, सुलभ मनोरंजन एवं रसादि की अनुभूति विशेष रूप से विद्यमान रहती है।

लोकवाद्यों का विश्व में प्रत्येक क्षेत्र के निवासियों को सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के अन्तर्गत धार्मिक सामाजिक व आर्थिक जीवन के निकट का सम्बन्ध रहा है। प्राचीन युग से ही संगीत वाद्यों का न केवल संगीत के कलात्मक रूप से ही लगाव रहा है, अपितु उसका अभिव्यंजनात्मक एवं प्रतीकात्मक रुप जीवन को प्रत्येक पहलू को स्पर्श करता दिखाई देता है।

हिमाचल प्रदेश के लोकवाद्य यहाँ के जन-जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ के प्रत्येक अवसरों में वाद्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। हिं० प्र० के सम्पूर्ण भू-भाग में लोगों की धर्म के प्रति विशेष आस्था है। सोने चांदी के बने मोहरों, लाल-पीले, हरे-नीले आदि रंग-बिरंगे कपड़ों से सुसज्जित पालकियों को कंधों पर उठाकर उनके हर सुख-दुख को बताकर अपने जीवन को सार्थक बनाया जाता है। लोकवाधों का देवी-देवताओं के साथ अटूट सम्बन्ध हिमाचल के प्रत्येक जिले में देखने को मिलता है. वास्तव में यहाँ लोकवाद्य धर्म के अंतरंग तत्व हैं। जनजातीय किन्नौर में बड़े देवताओं के अट्ठारह बजंतरी (वादक) होते हैं। देवी-देवताओं सम्बन्धी क्रिया-कलापों में जो वाद्य बजाये जाते हैं, उनमें ढोल, बुग्जाल, करनाल, रणसिंगा, शहनाई आदि प्रमुख होते हैं। देवता की पालकी को जब एक गांव से दूसरे गांव में ले जाया जाता है तो थे लोकवाद्य हो देव रथ के आगे-आगे बजाये जाते हैं। किन्नौर में देवपूजन में वाद्य वादन को अलग-अलग समय में अलग-अलग नाम दिए गए हैं रात को आरती के समय 'बेलंद' बजाते हैं। ब्रह्ममुहूर्त में 'नेमत' बढ़ाते हैं। 'बेलंड' सायंकाल बजाई जाने वाली आरती को तथा 'नमत' प्रातः होने पर बजाई जाने वाली धुन को कहते हैं। चम्बा, मंडी तथा विलासपुर में नगाड़े और शहनाई वादन से प्रातः सायं पूजा को 'नौबत' कहते है।

किन्नौर एवं लाहौल स्पिति को बौद्ध विहारों में तो वाद्य यंत्रों का तात्रिक विधान के अनुसार प्रयोग होता है। शिमला के 'हरसिंग' देवता के साथ तीन-चांदी डोल, एक नगाड़ा, दराध मुख्य हैं।

महासु क्षेत्र में किन्नरी दवातरा आदि वाद्यों का प्रयोग 'गूगापौर' वीर आदि लोकगाथाएँ गाते समय होता है। 'मेघराज', रात देवता, 'गोली माग' की लोककथा में लोकवाद्यों का बड़े सुंदर ढंग से वर्णन हुआ है यथा-

आणो देवा रूढडा रा झालर माणा

राजा रो हुकमा मेरा रोहडू रे जाणा।

लाधे हेडे देह आ टिकरे सजोरा,

भाई आणो रूढडा रा चाम्बारा नगारा।

रोहडू बोल बोठेया ते थी आपणे पाको

नोंरे चेई पित्तलू साथी बाज़गे ढाके।

धीरे फणे ओरा री छडी बरागा,

जाणो पंछु छोयो डूंगरी न रागा।

भावार्थ- जब देवता 'गोली नागा' रोहडू (स्थान का नाम) में सूखे से मुक्ति दिलाने के लिए वर्षा कराने के लिए गए थे और उनके वहाँ पहुँचते ही अम्बर में घनघोर बादल छा गए तथा रिमझिम वर्षा होने लगी। यह में देवता ने गरूड की 'पुजारली' (स्थान का नाम) में विश्राम किया। रूदड के ढोल, पीतल के नगाड़े, भाणा तथा अन्य लोकवाद्य बजाने वाले को पुजारली से लेकर रोहडू की ओर कुच किया गया। 'फणेहारा' नामक धार (पहाड़ी) पर पहुंचकर दराग तथा रणसिंघा से तूर्य नाद किया गया, जिससे पूरे क्षेत्र में ऐसी गर्जना हुई कि लक्कड़बग्घा (जानवर का नाम) ने सिंहनाद किया हो।

लोकवाद्यों का वादन जीवन में स्वाभाविक प्रवाह ला देता है। अतः लोकवाद्य सामाजिक जीवन की मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया का उपादान है और व्यक्तिगत जीवन का सुखबोध है विकास के क्रम में धर्म और संस्कृति एक दूसरे के पूरक हो जाते हैं। इसी कारण लोकसंगीत धर्म का अंतरंग तत्व बन गया है। वाद्यों द्वारा देवताओं का स्तुति गान इसी का संदर्भ है।

सिरमौर में देवी-देवताओं की दिन में तीन बार पूजा की जाती है। प्रातः काल जब देव स्तुति में वाद्य यंत्र बजाए जाते हैं उसे पूजा कहते हैं। सांझ ढले 'दियोल' तथा रात्रि 11 बजे लगभग 'नबद' बजाई जाती है। देवताओं की स्तुति में इन तीन कालों में 'बाम' (बड़ा नगाड़ा) मुख्य रूप से बजाया जाता है। कुल्लू में देव स्तुति में बजायी जाने वाली क्रिया को 'जूहण' कहते हैं। जब किसी अन्य देवता तथा विशिष्ट व्यक्ति के स्वागत में वाद्य यन्त्र बजाना हो तो उस क्रिया को 'हुआरा' कहते हैं। सिरमौर में देवताओं की पूजा में 'हुल्लक' 'हुड्डक' और 'डोउरू' का वादन भी होता है। दीवाली के गीतों में रक्षाबन्धन से कृष्ण जन्माष्टमी तक गाई जाने वाली वीरगाथाओं में 'हुड्डक' का वादन होता है। गुगा नवमी में केवल में 'डोरू' वाले गौतों में गायक मंडली द्वारा ढोलक, खंजरी ताली और घड़ा वादन होता है।

ऊना, हमीरपुर में रामायण गाथा में इकतारे का वादन स्वर देने के लिए होता है। इन क्षेत्रों में शिवस्तुति में रणसिंघे का वर्णन हुआ है जिससे इस क्षेत्र में इस लोकवाद्य की उपस्थिति का आभास होता है यथा-

जद दे जद जोगी तुम आये,

तद दे ऋगी नाद बजाये।

भावार्थ- जब शिवजी योगी का भेष बदलकर आये हैं तो उनके स्वागत में रणसिंहा वादन हुआ है।

एक किवदंती के अनुसार चम्बा में 'पौहल' तथा 'चंग' वाद्य का निर्माण शिवजी के द्वारा माना गया है। चम्बा के गद्दी जन-जीवन में 'हुसंतरण' तथा 'ऐचली' गाथाओं में लोकवाद्य गायन के साथ खंजरी रूवाना वादन भी करते हैं। मणी महेश यात्रा को एक पवित्र तथा धार्मिक यात्रा माना जाता है। इस धार्मिक यात्रा में भी चम्बा से लोगों का झुण्ड शिवस्तुति गाते हुए लोकवाच्चों को बजाते हुए मणि महेश की ओर चल पड़ते हैं। शिवस्तुति की एक बानगी में लोकवाद्यों का स्पष्ट वर्णन हुआ है यथा-

अस्सी वो आये देवा बजादे पौहलें देवा,

दिख मेहर करो। अस्सी वो आये देवा बजादे रणसिंघे,

दिख मेहर करो।

अस्सी आये देवा बजादे काहलिये,

दिख मेहर करो।

अस्सी वो आये देवा बजादे काहलिये,

दिख मेहर करो।

असी वो आये देवा बजादे नगारे, दिख मेहर करो।

भावार्थ- अर्थात् हे देव, हम आपसे पास पौहल, रणसिंधा काहल और नगारे बजाते हुए आ रहे हैं। अत: हम पर कृपा करके हमारी यात्रा को सफल बनाना।

कुल्लू में कुछ लोकवाद्य केवल देव पूजन में ही बजाये जाते हैं। ढौंस पंचमुखी, काइल, भाणा तथा जछाला वादन देवपूजन में ही होता है। दौस लोकवाद्य कुल्लू के देवता द्वारा निर्मित माना जाता है। इस वाद्य के बारे में लोकगीत में भी कहा गया है-

म्हारे देठआ रा बौंस भाई रामा ढाकर देउआरा रागा।

भावार्थ-हमारे देवता का वाद्य ढौंस है और ढाकर देवते का गान है।

ग्रामीण एकता में भी लोकवाद्य अपना योगदान देते हैं। किन्नौर में मंदिर के प्रांगण में लोगों को एकत्रित करने के लिए रणसिंघे का आहवान किया जाता है। जिसे सुनकर गांव के लोग देवमंदिर के प्रांगण में एकत्रित होते हैं। लोकवाद्यों का वादन करने के लिए एक विशिष्ट वर्ग होता है जिसे सम्पूर्ण हिमाचल में अलग-अलग नामों से जाना जाता है जैसे किन्नौरी में बवन्तरी- ऊपरी शिमला में डुम्मण आदि नामों की संज्ञा दी गई है। वास्तव में देखा जाए तो हिमाचल में देवी-देवताओं के साथ लोकवाद्य का अटूट सम्बन्ध है। यहाँ प्रत्येक धार्मिक अवसरों पर लोकवाद्य महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

निष्कर्ष

हिमाचल प्रदेश की धार्मिक परंपराओं में लोकवाद्यों का महत्व केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि वे यहां के आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन के आधार स्तंभहैं। ढोल, नगाड़ा, शहनाई, करनाल, रणसिंगा और शृंग जैसे वाद्य देवपूजा, धार्मिक अनुष्ठानों, मेलों और त्योहारों के वातावरण को पवित्रता और ऊर्जा से भर देते हैं। इनकी ध्वनि श्रद्धालुओं के मन में भक्ति, उल्लास और सामूहिकता की भावना जगाती है तथा देवताओं के आवाहन और आशीर्वाद का प्रतीक बनती है। लोकवाद्य हिमाचल की धार्मिक परंपराओं में आस्था, सांस्कृतिक पहचान और विरासत की निरंतरता के प्रतीक हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी इस भूमि की आध्यात्मिक धरोहर को समृद्ध करते रहे हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

गर्ग, प्रो0 नन्दलाल, हिमाचल के प्राचीनतम संगीत वाद्य, संगीतम नाटक अकादमी, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2000

नेगी, डॉ. सरिता, किन्नौर के विभिन्न लोकभाषाओं मे गाए जाने वाले लोकगीतों का सांगीतिक विवेचन, नैतिक प्रकाशन, उ0प्र0, सन् 2020, पृ0 150-158

ठाकुर, सूरत, Folk Musical Instruments of Himachal Pradesh National Book Trust of India.